IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

"चंदेल कालीन स्थापत्य कला एवं संस्कृति के परिप्रेक्ष्य में एक ऐतिहासिक अध्ययन"

पीएम कॉलेज ऑफ़ एक्सीलेंस,शासकीय माधव कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, उज्जैन मध्य प्रदेश

(इतिहास विभाग) शोध छात्र रूपलाल अहिरवार एवं आकाश अहिरवार

शोध सारांश:- भारतीय इतिहास में चंदेल वंश 10वी शताब्दी से 13वीं शताब्दी तक का समय महत्वपूर्ण काल रहा है। इस वंश ने बुंदेलखंड के क्षेत्र वर्तमान मध्य प्रदेश और उत्तर प्रदेश में शासन किया तथा अपनी स्थापत्य कला मंदिर निर्माण कला मूर्ति कला एवं सांस्कृतिक उपलब्धियां के कारण मूर्ति कला उन्नति के चरम बिंदु पर पहुंच गई, भारतीय समाज स्थापित कला की इस विशेषता के कारण भारत में अनेक मंदिरों का निर्माण हुआ, जिसमें प्रमुख रूप से खजुराहो के मंदिर चंदेल कालीन स्थापत्य कला के सर्वोत्तम उदाहरण हैं। मंदिरों को तीन समूहों में बांटा गया है । हिंदू मंदिर जिसमें कंदरिया महादेव मंदिर, लक्ष्मण मंदिर, विश्वनाथ मंदिर, जैन मंदिर, यह मंदिर घटाई मंदिर योगिनी मंदिर जो मात्र देवी को समर्पित हैं। मंदिरों की ऊंचाई पिरामिड शैली में बने हुए हैं। इनमें शिकार पुरुष रंग अमला कलश अत्यंत सुसज्जित होते हैं। गर्भ ग्रह इसमें मंडप एवं महामंडप तथा अर्ध मंडप होता है। मंदिर की संरचना की प्रमुख भाग मंदिरों की दीवारों पर देवी देवताओं की मिथुन मूर्तियां , नृत्य एवं पौराणिक कथाओं को चित्रित किया गया है।

चंदेल वंश की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि :- चंदेल वंश की स्थापना नवमी शताब्दी में हुई तथा इसका उत्कर्ष दशमी शताब्दी में हुआ। इस वंश की नींव चंदेल शासकों ने डाली थी। बुंदेलखंड के दक्षिण भाग में इस वंश की राजधानी खजुराहो खजूर वाहक थी, इस वंश के प्रमुख शासक हुए जिसमें यशोवर्मन (925 से 950) ढंगशासक (950 से 999 ई.) और परमार्दिदेव (1165 से 1203) आदि शासक शामिल थे। इन शासको ने स्थापत्य कला को बढ़ावा दिया, एवं खजुराहो महोबा ,कालिंजर में इन्होंने विभिन्न मंदिरों का निर्माण कराया□1

चंदेल कालीन स्थापत्य कला का विवरण: चंदेलों की स्थापत्य कला भारतीय मंदिर वास्तुकला का उत्कृष्ट उदाहरण है। इस युग में मंदिर निर्माण की विशेष शैली विकसित हुई जिसे नगर शैली के अंतर्गत रखा जाता है। चंदेल नरेश निर्माण की ओर विशेष ध्यान देते थे उनके अधिकारी तथा जनता भी उनके आदर्शों का अनुसरण करती थी। इनका निर्माण केवल मंदिरों तक सीमित नहीं था, अपितु भवनों तथा सैनिक स्थापत्य कला की ओर विशेष रूचि थी।2

धार्मिक स्थापत्य कला का विवरण -: चंदेल वंश ब्राह्मण धर्म के समर्थक थे, तथा वह अन्य धर्म के प्रति भी सहिष्णुता का भाव रखते थे। इसी कारण विभिन्न धर्म की मंदिर समस्त बुंदेलखंड में पाए जाते हैं। धार्मिक स्थापत्य कला ,बौद्ध स्थापित कला, ब्राह्मण स्थापत्य,कला प्रमुख रूप से बुंदेलखंड में चंदेल शासको ने जो मंदिर निर्मित किए हैं उनमें देखने को मिलती है। तथा जैन स्थापत्य कला भी वहां की एक प्रमुख विशेषता थी□3

ब्राह्मण स्थापत्य कला: इस युग में ब्राह्मण धर्म के अंतर्गत अनेक देवी देवताओं का प्रदुर्भाव हो चुका था इसी आधार पर शिव वैष्णव, तथा सूर्य एवं दुर्गा महेश्वरी आदि अन्य देवताओं के मंदिरों का निर्माण हुआ एवं चंदेलों की धार्मिक राजधानी खजुराहो में हिंदू तथा जैन मंदिरों के उत्कृष्ट नमूने मिले हैं □इस प्रकार से चंदेल कालीन स्थापत्य कला में यह चार दीवार के अंदर नहीं है, बल्कि यह मंदिर ठोस एक ऊंचे चबूतरे पर निर्मित है इस मंदिर के मुख्यत: तीन भाग हैं गर्भ ग्रह मंडप अर्थ मंडप कुछ बड़े मंदिरों में महामंडप तथा गर्भ ग्रह की परिक्रमा का विधान रहता है। इस प्रकार से खजुराहो के चंदेल का दिन मंदिरों में यह है ब्राह्मण धर्म की स्थापत्य कला का उदाहरण हमें देखने को मिलता है।4

खजुराहो के प्रमुख मंदिर: खजुराहो के मंदिर में यह सबसे विशाल मंदिर है। यह 109 फीट लंबा तथा 7 फीट चौड़ा है यहां की भूमि सात से इसकी ऊंचाई 116 फीट तथा मंदिर के फार्म से इसकी ऊंचाई 88 फिट है। इसमें अर्धमंडप महामण्डप अंतराल तथा गर्भ ग्रह है। एवं सभी के विशाल शिकार हैं गर्भ ग्रह के चारों ओर प्रदक्षिणा पथ है जो दीप को से प्रकाशित होता रहता है। इस मंदिर की छाती प्रमुख सुंदर हैं। तथा छतों एवं मंदिरों की दीवारों पर देवी देवताओं की बहुसंख्यक मूर्तियां उत्कीर्ण की गई हैं ,तथा मंदिर की इस 23 फीट ऊंची है। बड़े एवं मजबूत पत्थरों से निर्मित किया है बनी है यह शिव मंदिर है तथा इसमें साड़ी 4 फीट घेरे का शिवलिंग है। इस मंदिर में लगभग इसका निर्माण 11वीं तथा 12वीं शताब्दी में हुआ था।खजुराहो का विश्वनाथ का मंदिर: यह मंदिर हिंदू देवता तथा भगवान शिव को समर्पित है । संगमरमर का शिवलिंग मुख देवता के रूप में पूजा जाता है ।यह मंदिर पश्चिम समूह है के मंदिरों के अंतर्गत आता है। तथा यह मंदिर पंचायतन शैली में बना है, जिसके कोने पर चार मंदिर तथा बीच में मुख्य मंदिर को घेर है। इसका निर्माण (1002 से 1003) में ईस्वी में हुआ था तथा इस मंदिर की लंबाई 89 फिट और चौड़ाई 45 फिट है, केंद्र में नंदी की प्रतिमा स्थापित की गई है। मंदिर में तीन सर वाले ब्रह्मा की मूर्ति है। लेकिन इस मूर्ति का कुछ भाग खंडित हो चुका है इस मंदिर में 620 प्रतिमाएं हैं। इस प्रतिमाओं का आकार जिसके 6 फीट ऊंचा है। महादेव मंदिर के पूर्ववर्ती भाग के उपनाम से जाना जाता है। मंदिर में दो उप मंदिर उत्तर पूर्वी दक्षिणमुखी ,दक्षिण पश्चिमी पूर्वी मुखी दोनों मंदिर पर भी पट्टी गांव पर मिथुन की क्रियाएं प्रतिमाएं स्थापित हैं। इस प्रकार से इन मंदिरों के भीतर अर्द्ध मंडप अंतराल गर्भ गृह तथा प्रदक्षिणा पथ निर्मित है□5

मृत्युजय महादेव का मंदिर:- यह चतुर्भुज मंदिर के समीप स्थित है ,और यह अंदर से 24 फीट लंबा और बाहर से 35 वर्ग फीट चौड़ा है। इसकी छत पिरामिड के रूप में त्रिकोण आकार है, जो धीरे-धीरे कम चौड़ी होती गई है इस मंदिर में अधिक पुताई होने के कारण दीवारों तथा छतों की मूर्ति कला लुप्त हो चुकी है।

चंदेल कालीन विष्णु मंदिर: -चंदेल राज्य काल में वैष्णो धाम का भी बड़ा प्रचार था, किंतु विष्णु की पूजा के साथ ही साथ उसके अवतारों की पूजा का प्रसार हो चुका था। अतः चंदेलों के मंदिरों में विष्णु तथा उनके अवतारों के भी मंदिर पाए जाते हैं। इस प्रकार से चंदेलकाल में वैष्णव धर्म की मूर्तियों एवं मंदिरों का निर्माण होता था।6

देवी जगदंबी मंदिर: -यह एक विष्णु मंदिर है, क्योंकि इसके गर्भ ग्रह की मुख्य द्वार पर विष्णु की मूर्ति प्रतिष्ठित है, तथा दाहिनी ओर से तथा बाएं और ब्रह्मा की मूर्ति है। गर्भ ग्रह के अंदर भगवती लक्ष्मी की 5 फीट 8 इंच ऊंची विशाल मूर्ति है। इसी कारण यह है देवी जगदंबी का मंदिर कहलाता है इसके चार भाग हैं अर्थ मंडप इस मंदिर में नहीं है यह 77 फीट लंबा तथा 49 फीट चौड़ा है। यह इसका निर्माण 11वीं 12वीं शताब्दी में हुआ।

खजुराहो का चतुर्भुज मंदिर: -यह रामचंद्र तथा लक्ष्मण जी के मंदिर के नाम से प्रसिद्ध है लेकिन इस चतुर्भुज मंदिर इसलिए कहा जाता है। क्योंकि इसमें भगवान विष्णु की चार भुजाओं वाली मूर्ति प्रतिष्ठित है इसमें पांच भाग हैं तथा पांच ऑफ मंदिर हैं ।चार मंदिर इसके कोनों पर तथा पांचवा मंदिर मुख्य द्वार के सामने स्थित है। यह मंदिर उत्कीर्ण मूर्तियों में अलंकृत है, तथा इसके चार फीट एवं एक इंच ऊंची मूर्ति है।7

खजुराहो का वराह मंदिर:- यह चतुर्भुज मंदिर पूर्व की ओर स्थित है भगवान विष्णु की है अवतार की विशाल मूर्ति है यह छोटा मंदिर है इसकी लंबाई 20 फीट तथा चौड़ाई 26 फिट है। इसकी प्रतीक कोने में तीन स्तंभ तथा पश्चिम की ओर दो स्तंभ है जिसके आश्रय में एक बरामदा तथा एक रास्ता बना हुआ है, इसकी छत एक के बाद दूसरे वर्गाकार पत्थर पर रखकर बनाई गई है वराह मूर्ति 6 फुट 7 इंच लंबी तथा 4 फीट 6 इंच ऊंची है, जिसमें खड़े हुए वराह की मूर्ति है। जिसके दोनों पर मूर्ति की पीठ का पर दिखलाई गए हैं। ब्रह्मा की मूर्ति के नीचे कुंडली बांधे सांप की मूर्ति है जिसकी पूछ पर वराह की पूछ रखी हुई है।8

ब्रह्मा मंदिर: -चंदेल कल में ब्रह्मा की पूजा का अधिक प्रचार प्रसार नहीं था। जिस कारण ब्रह्मा मंदिरों की संख्या बहुत कम देखने को मिलती है खजुराहो का ब्रह्मा मंदिर एक झील के किनारे पर स्थित है। यह आकार में वर्गाकार तथा लाल पत्थर की चट्टानों से निर्मित है। अब यह मंदिर क्षतिग्रस्त हो चुका हैं। सबसे महत्वपूर्ण पशु चित्रण नदी का है जो शिव का बैल जिसे एक ही पत्थर से तरस कर चंदेल राजा ढंग के द्वारा निर्मित किया गया था, विश्वनाथ मंदिर के सामने नदी मंडप में स्थापित किया गया है। इसी तरह वराह को चंदेल कला में प्रमुख स्थान प्राप्त है। वहां की सबसे भव्य छवि लक्ष्मण के मंदिर के सामने यह मंदिर स्थापित है,और बलुआ पत्थर के टुकड़े पर उकेरी गई है यह विशाल विराट छवि को यशोवर्मन ने अपनी जीत के उपलक्ष में स्थापित किया था।9

चंदेल कालीन प्रमुख साथ मंदिरों का विवरण

ब्राह्मण ब्राह्मण धर्म में त्रिदेवों की पूजा के अतिरिक्त उनकी शक्तियों की भी उपासना होती थी। अतः उनके भी मंदिरों का निर्माण हुआ। इसके अतिरिक्त कुछ अन्य देवी देवताओं की भी पूजा होती थी जिनकी मंदिरों को निर्माण चंदेल कल के समय में हुआ।

खजुराहो को पार्वती मंदिर:- यह विश्वनाथ मंदिर के दक्षिण की ओर स्थित है। तथा यह एक छोटा मंदिर है और अब भगवान सा शेष मात्र रह गया है मंदिर के अंदर 5 फीट ऊंची खड़ी हुई चतुर्भुजी देवी की मूर्ति है ।यह पार्वती की मूर्ति कही जाती है किंतु करनी का महोदय का अनुमान है की लक्ष्मी की मूर्ति है क्योंकि इस मूर्ति के सिर के ऊपर विष्णु की एक छोटी मूर्ति है10

64 योगिनी मंदिर:- खजुराहो का यह प्राचीन मंदिर है। यह है शिवसागर कि दक्षिण पश्चिम में 25 फीट ऊंची चट्टान पर स्थित है पूर्ण ग्राम यह मंदिर कड़ी चट्टानों के पत्थर से बना है और अब भाषण शेष मात्र रह गया है इसकी चार दीवारों में मूर्तियों को रखने के लिए 64 छोटी-छोटी कोठिया बनी हुई हैं, इसका सहन

आयताकार है,और यह इसकी लंबाई 702 फीट तथा चौड़ाई 59 फिट है इसमें 64 कोठियों चारों ओर दीवारों पर बनी हुई है। पिछली दीवार के मध्य में एक बड़ी कोठी है। और प्रतीक कोठी 2 फीट 4 इंच चौड़ी तथा 9 इंच गहरी है इसका प्रवेश द्वार 32 इंच ऊंचा तथा 16 इंच चौड़ा है ,पूर्ण ग्राम और इसमें लकड़ी के दरवाजे थे जिनके अब चिन्ह मात्र रह गए हैं। प्रत्येक कोठी की छत स्तंभकार है, जो ऊपर को सक्रिय तथा होती चली गई है। इसके बाद एक के बाद दूसरे अमला तथा उसके ऊपर शिकार है इस प्रकार प्रत्येक कोठी को अपनी मंदिर के रूप में है प्रत्येक मंदिर में एक योगिनी मूर्ति है। अब अधिकांश मूर्तियां उपलब्ध नहीं है।11

चंदेल कालीन जैन मंदिर की स्थापत्य कला:-

चंदेल कल में हिंदू धर्म के बाद जैन मत का ही प्रबल प्रचार हुआ था उसे युग में वहां अनेक जैन मंदिरों का निर्माण हुआ जो समस्त बुंदेलखंड में पाए जाते हैं किंतु खजुराहो में प्राप्त जैन मंदिर अधिक उल्लेखनीय हैं अनेक विशाल मंदिरों को मुस्लिम विजेताओं ने मस्जिदों में परिवर्तित कर दिया था। और अनेक मंदिर प्रकृति के द्वारा नष्ट कर दिए गए पूर्ण ग्राम जैन मंदिर अपनी बनावट में ब्राह्मण मंदिरों से भिन्न है जैन मंदिरों में गर्भ ग्रह की चारों ओर प्रदक्षिणा पथ होता है। मंडप अंतराल तथा गर्भ गिरा है सब एक ही नाम से होते हैं। साधारण बनावट में जैन मंदिर की प्रतीक अष्टकोण स्तंभों में तीन दीवारें होती हैं, इस प्रकार सभी तीर्थंकरों की मूर्ति रखने के लिए 24 दीवारों का विधान जैन मंदिर में होता है।12

खजुराहो का पार्श्वनाथ मंदिर:- यह मंदिर बड़ी जर्जर अवस्था में है। और मूल मंदिर का गर्भ ग्रह मात्र शेष है, पूर्ण गर्व के पास एक नग्न पुरुष की प्रतिमा तथा दाहिनी और एक नग्न नारी की प्रतिमा मध्य में तीन बैठी हुई नई की मूर्तियां हैं। गर्भ ग्रह के अंदर तीर्थंकर पार्श्व नाथ की एक छोटी मूर्ति है। मंदिर का एक बाहरी भाग छोटी मूर्तियां को तीन पंक्तियों से अलंकृत है। देश की लिपि से यह अनुमान है की मूल मंदिर का निर्माण दशमी तथा 11वीं शताब्दी में हुआ था □13

खजुराहो का घंटाई मंदिर:-अब यह मंदिर खुदी हुई स्तंभों का मंदिर है जो 42 फीट साड़ी 10 इंच लंबा तथा 21 फीट 6.30 इंच चौड़ा है। किंतु मंदिर के चारों ओर दीवारों के चिन्ह पाए जाते हैं मुख्य द्वार के मध्य में एक चतुर्भुजी देवी की मूर्ति है और उनके दोनों और एक नग्न पुरुष की छोटी प्रतिमा है ,मंदिर के अंदर की बनावट तथा वहां की मूर्ति कला के अध्ययन से यह स्पष्ट है कि यह जैन मंदिर है। इसमें आठ अष्टकोणीय स्तंभ है जिनकी ऊंचाई 14 फीट 6 इंच है और उनकी सजावट भी बड़ी सुंदर है खजुराहो का सेतु मंदिर यह एक प्राचीन जैन मंदिर है जिसका हाल ही में सुधार हुआ है ,इस मंदिर की मुख्य प्रतिमा आदिनाथ की है जो 14 फीट ऊंची है यह विशाल मूर्ति आदिनाथ के नाम से जानी जाती है ।इस मूर्ति की पीठ में विक्रम संवत् तथा सन 1028ई का उल्लेख है□14

निष्कर्ष :

चंदेलों की स्थापत्य कला और संस्कृति भारतीय इतिहास की अनमोल धरोहर है। उनके द्वारा बनाए गए मंदिर, किले और जलाशय उनकी उत्कृष्ट कला के प्रमाण हैं। खजुराहो के मंदिरों की भव्यता आज भी विश्वभर के पर्यटकों को आकर्षित करती है। स्थापत्य और संस्कृति के प्रति चंदेलों की निष्ठा ने भारतीय सभ्यता को एक नई ऊँचाई चंदेल शासक केवल योद्धा ही नहीं, बल्कि महान कला संरक्षक भी थे। उन्होंने मंदिरों, किलों और जलाशयों का निर्माण कर स्थापत्य कला को नया आयाम दिया। खजुराहो के मंदिर, कालिंजर किला और महोबा के तालाब चंदेलकालीन कला की श्रेष्ठतम उपलब्धियाँ हैं। उनकी संस्कृति में धार्मिक सहिष्णुता,

संगीत, नृत्य और लोक जीवन का महत्वपूर्ण स्थान था। चंदेलकालीन स्थापत्य और संस्कृति भारतीय इतिहास की गौरवशाली धरोहर हैं, जो आज भी अपनी भव्यता और कलात्मकता के लिए प्रसिद्ध हैं।

संदर्भ सूची

1.कुमार जैन संजीव, प्राचीन भारत का इतिहास (2020) पृष्ठ 191

2. सिंह रविंद्र ,प्राचीन भारत का इतिहास(प्रारंभ से 1200 ई) तक प्रथम संस्करण (2022) पृष्ठ क्रमांक 298।

3 .बुंदेलखंड रिसर्च पोर्टल, चंदेल युगीन ललित कलाएं, पृष्ठ ,क्रमांक 4।

4.मिश्रा मुक्ता, चंदेल कालीन बुंदेलखंड में सामाजिक एवं सांस्कृतिक, अध्ययन,(2023) पृष्ठ.138

5. वही. पृष्ठ 5

6. वही. पृष्ठ 6

7. विजय शंकर प्रजापति, चंदेल कालीन बुंदेलखंड में सामाजिक एवं सांस्कृतिक इतिहास, पृष्ठ,6

8. पांडे धनपत, प्राचीन भारत का राजनीतिक और संस्कृति की इतिहास (1998) पृष्ठ क्रमांक 230।

9. वही. पृष्ठ 231

10. शास्त्री नीलकंठ, भारतीय कला एवं संस्कृति पृष्ठ क्रमांक18

11. भार्गवगोपाल,मध्य प्रदेश की संस्कृति एवं कला, (2018) पृष्ठ क्रमांक 26

12 शर्मा रामशरण, प्राचीन भारतीय इतिहास, पृष्ठ क्रमांक 27।

13. हंसा व्यास ,भारत का इतिहास, (प्रारंभ से 1200 ई.)तक मध्य प्रदेश, हिंदी ग्रंथ अकादमी, भोपाल (2020) पृष्ठ क्रमांक 293

14 बुंदेलखंड रिसर्च पोर्टल, चंदेलयुगीन ललित कलाएं, पृष्ठ क्रमांक,06